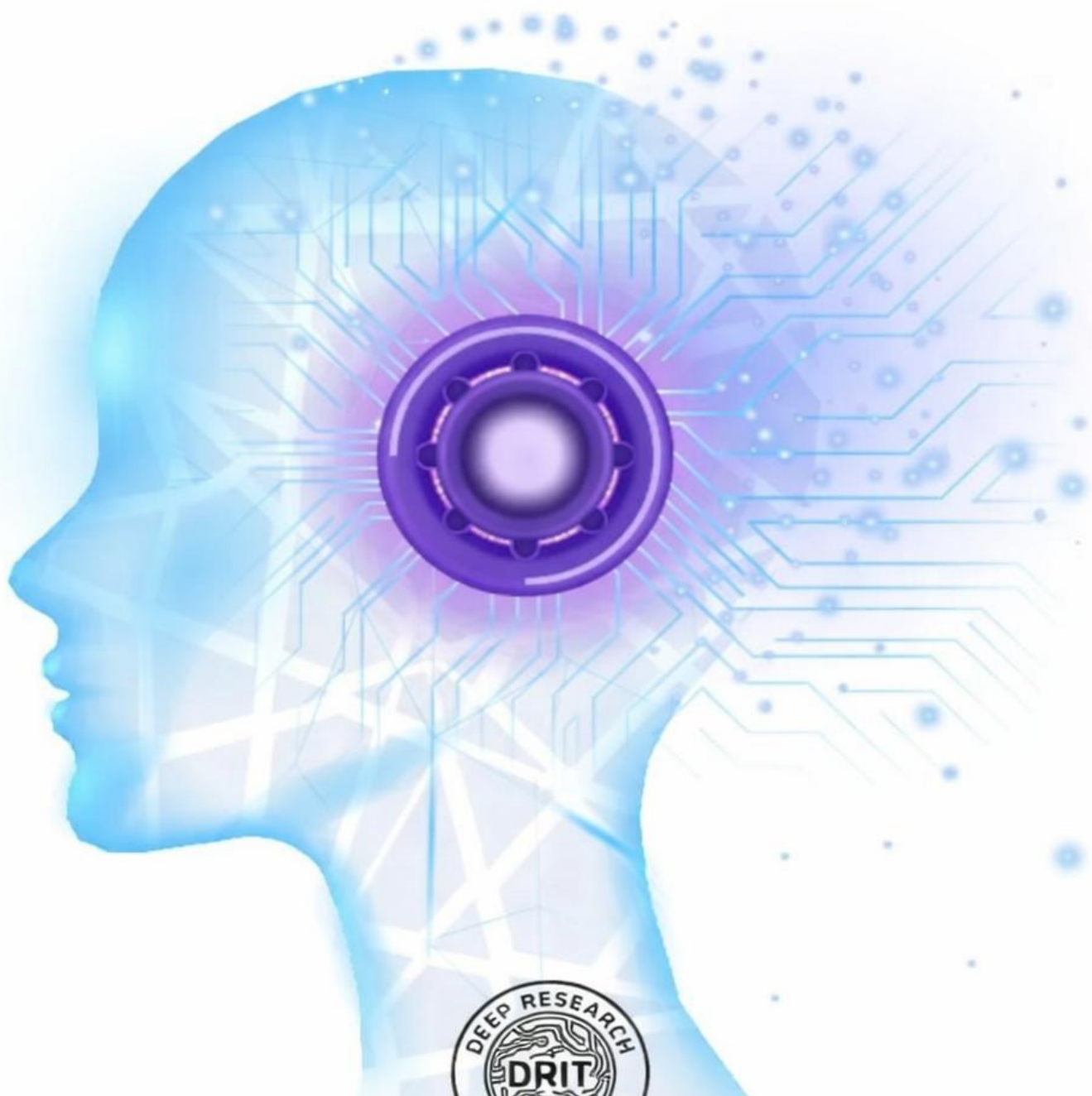


DEEP RESEARCH JOURNAL (DRJ)

MULTIDISCIPLINARY RESARCH
&
PEER-REVIEWED PUBLICATIONS



Deep Research Journal (DRJ)

Issue: 01, Volume: 01

January - March 2026

Subject: Multidisciplinary

Online – journal

Chief Editor

Dr. Shailendra Yadav

Founder & CEO, Deep Research InfoTech

Editorial Board

Dr. Savya Sachi

Assistant Professor

L. N. Mishra Institute of Economic
Development and Social Change, Patna

Dr. Shyam Singh

Assistant Professor,

Department of Social Work
Dr. Shakuntala Misra National
Rehabilitation University,
Lucknow

Dr. Santosh Kumar Jha

Senior Assistant Professor

Department of Computer Application
L. N. Mishra Institute of Economic
Development and Social Change, Patna,
Bihar

Vijay Kumar

Assistant Professor,
Dept. of IT

Ashish Kumar

Assistant Professor,
Dept. of CSE

Dr. Premkumar Naik

Chief Editor: Indian Social Empowerment
Research Journal
president : Social Empowerment
Multipurpose Organization Wardha,
Maharashtra

Dr. Chhabinath Yadav

Assistant Professor
MATS University,
Raipur, Chhattisgarh

Peer Review Committee And Advisory Board

Dr. Heera Rai

Head Consultant Pan India, Director at
Diamond Fantasy & Faculty at Infinity
College, Saga

Dr (Prof) Anil Rao Pimplapure

Advisor CS/IT, Dean & Professor,
School of Engineering, Eklavya
University, M.P.

Dr. Madhavi Tiwari

SVN University, Sagar MP.

Dr. Sanjay Chauhan

SVN University, Sagar MP

Dr. Savya Sachi

Writing Review Expert, Assistant
Professor at L. N. Mishra Institute,
Patna (Bihar)

Dr. Shakti Pandey

Assistant Professor,
Department of Computer
Application, J. D. Women's
College, Patna.

Publication

Deep Research InfoTech

20/419, Behind TCPC Khurai Road Infront of Shiva Tyres, Sashtri Ward Sagar
470002 Madhya Pradesh INDIA

E-mail:- info@deepresearchinfotech.com

Mobile number:- +91 8839187806, +91 6262182332

Home Page : <https://deepresearchinfotech.com/>

Journal Page:- <https://deepresearchinfotech.com/international-journal-of-deep-research-ijdr/>

Hyperlink:- <https://deepresearchinfotech.com/international-journal-of-deep-research-ijdr/>

Deep Research Journal (DRJ)

ISSN: _____

Issue: 01, Volume: 01

January - March 2026

अनुक्रमणिका

S. N.		Peg. N.
1.	Transformer-Based Models in Multilingual Natural Language Processing: Advances, Challenges, and Future Directions	1
	Rao Amita Yadav	
2.	Computational Linguistics in AI: Bridging Human Language and Machine Intelligence	12
	Dr. Shailendra Yadav	
3.	Base metal deposits in the Adharshila-Dariba Block, Neem Ka Thana Region, Rajasthan are affected by terrain and rock formations.	26
	Renshu Deshwal	
4.	Digital technology affects library services and user engagement	36
	Pallavi Kumari	
5.	Pesticide Residue Analysis and Its Impact on Human Health in Bikaner District of Arid Rajasthan	47
	Ritika Rai	
6.	तनाव प्रबंधन में सकारात्मक चिंतन, आत्म-सुझाव और आत्म-नियंत्रण की प्रभावशीलता का मनोवैज्ञानिक अध्ययन	62
	कांचन बांगर	

तनाव प्रबंधन में सकारात्मक चिंतन, आत्म-सुझाव और आत्म-नियंत्रण की प्रभावशीलता का मनोवैज्ञानिक अध्ययन

कांचन बांगर

शोधार्थी, मनोविज्ञान विभाग

राष्ट्रसंत तुकड़ोजी महाराज नागपुर विश्वविद्यालय

सारांश

आधुनिक युग में तनाव मानव जीवन की एक प्रमुख समस्या बन गई है। व्यक्तिगत, सामाजिक और व्यावसायिक जीवन में बढ़ती जटिलताओं के कारण तनाव का स्तर निरंतर बढ़ रहा है। प्रस्तुत शोध पत्र में तनाव प्रबंधन के तीन महत्वपूर्ण मनोवैज्ञानिक तकनीकों - सकारात्मक चिंतन, आत्म-सुझाव और आत्म-नियंत्रण की प्रभावशीलता का विस्तृत अध्ययन किया गया है। यह अध्ययन इन तकनीकों के सैद्धांतिक आधार, व्यावहारिक उपयोग और मानसिक स्वास्थ्य पर प्रभाव का गहन विश्लेषण प्रस्तुत करता है।

मुख्य शब्द: तनाव प्रबंधन, सकारात्मक चिंतन, आत्म-सुझाव, आत्म-नियंत्रण, मनोवैज्ञानिक कल्याण

प्रस्तावना

तनाव एक मनोदैहिक अवस्था है जो व्यक्ति की शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक क्षमताओं को प्रभावित करती है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार, तनाव 21वीं सदी की सबसे बड़ी स्वास्थ्य चुनौतियों में से एक है। भारतीय संदर्भ में, तेजी से बदलती जीवनशैली, शहरीकरण, प्रतिस्पर्धा और सामाजिक दबाव ने तनाव की समस्या को और गंभीर बना दिया है।

मनोविज्ञान में तनाव को दो प्रमुख दृष्टिकोणों से समझा जाता है। पहला, हंस सेल्ये का सामान्य अनुकूलन सिंड्रोम और दूसरा, लाजारस और फोकमैन का संज्ञानात्मक मूल्यांकन सिद्धांत। इन सिद्धांतों के अनुसार, तनाव केवल बाह्य परिस्थितियों का परिणाम नहीं है, बल्कि व्यक्ति की परिस्थितियों के प्रति संज्ञानात्मक और भावनात्मक प्रतिक्रिया भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

तनाव प्रबंधन के लिए विभिन्न मनोवैज्ञानिक तकनीकें विकसित की गई हैं, जिनमें सकारात्मक चिंतन, आत्म-सुझाव और आत्म-नियंत्रण प्रमुख हैं। ये तकनीकें व्यक्ति को तनावपूर्ण परिस्थितियों से निपटने के लिए आंतरिक संसाधनों का विकास करने में सहायता करती हैं।

शोध का औचित्य

भारतीय समाज में तनाव से संबंधित समस्याओं में वृद्धि हो रही है। राष्ट्रीय मानसिक स्वास्थ्य सर्वेक्षण के अनुसार, भारत की लगभग 10-15% जनसंख्या किसी न किसी प्रकार के मानसिक स्वास्थ्य विकार से पीड़ित है, जिसमें तनाव एक प्रमुख कारक है। इसके अतिरिक्त, कार्यस्थल पर तनाव, पारिवारिक संघर्ष और शैक्षणिक दबाव भी चिंता के विषय हैं।

यह शोध इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि यह तनाव प्रबंधन के लिए सरल, व्यावहारिक और प्रभावी मनोवैज्ञानिक तकनीकों की पहचान और विश्लेषण करता है। इन तकनीकों को बिना किसी विशेष संसाधनों या चिकित्सीय हस्तक्षेप के दैनिक जीवन में अपनाया जा सकता है।

सैद्धांतिक पृष्ठभूमि

1. सकारात्मक चिंतन (Positive Thinking)

सकारात्मक चिंतन का अर्थ है परिस्थितियों को रचनात्मक और आशावादी दृष्टिकोण से देखना। मार्टिन सेलिंगमन के सकारात्मक मनोविज्ञान सिद्धांत के अनुसार, व्यक्ति की विचार प्रक्रिया उसके भावनात्मक और मानसिक स्वास्थ्य को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करती है।

सकारात्मक चिंतन के मुख्य घटक हैं:

- आशावादी दृष्टिकोण
- समस्या-समाधान उन्मुख सोच
- कृतज्ञता की भावना
- नकारात्मक विचारों को चुनौती देना

शोध अध्ययनों से पता चला है कि सकारात्मक चिंतन तनाव हार्मोन कोर्टिसोल के स्तर को कम करता है और प्रतिरक्षा प्रणाली को मजबूत बनाता है। कार्वर और शीयर के आशावाद सिद्धांत के अनुसार, आशावादी व्यक्ति तनावपूर्ण परिस्थितियों में बेहतर अनुकूलन दिखाते हैं।

2. आत्म-सुझाव (Auto-suggestion)

आत्म-सुझाव या स्व-सुझाव एक मनोवैज्ञानिक तकनीक है जिसमें व्यक्ति अपने अवचेतन मन को सकारात्मक संदेश देता है। एमिल कुए, जो आत्म-सुझाव के जनक माने जाते हैं, ने प्रतिपादित किया कि "प्रतिदिन, हर तरह से, मैं बेहतर और बेहतर होता जा रहा हूँ" जैसे सकारात्मक कथनों का नियमित उपयोग व्यक्ति के मानसिक स्वास्थ्य में सुधार लाता है।

आत्म-सुझाव की प्रमुख विशेषताएं:

- आत्म-प्रेरक कथनों का उपयोग
- दोहराव की शक्ति
- विश्वास और आस्था का निर्माण
- अवचेतन मन पर प्रभाव

आधुनिक संज्ञानात्मक व्यवहार चिकित्सा में भी आत्म-सुझाव का व्यापक उपयोग किया जाता है। सकारात्मक पुष्टिकरण (positive affirmations) तकनीक आत्म-सुझाव का ही एक रूप है।

3. आत्म-नियंत्रण (Self-control)

आत्म-नियंत्रण व्यक्ति की अपनी भावनाओं, विचारों और व्यवहार को नियंत्रित करने की क्षमता है। बॉमिस्टर और वोह्स के अनुसार, आत्म-नियंत्रण एक सीमित संसाधन है जो अभ्यास से विकसित किया जा सकता है।

आत्म-नियंत्रण के प्रमुख आयाम:

- आवेगों पर नियंत्रण
- भावनात्मक नियमन
- विलंबित संतुष्टि की क्षमता
- ध्यान केंद्रित करने की योग्यता

शोध दर्शाते हैं कि उच्च आत्म-नियंत्रण वाले व्यक्ति तनाव को बेहतर ढंग से प्रबंधित कर सकते हैं और स्वस्थ जीवनशैली अपनाते हैं।

तनाव प्रबंधन में तकनीकों की प्रभावशीलता

तालिका 1: तनाव प्रबंधन तकनीकों का तुलनात्मक विश्लेषण

तकनीक	मुख्य सिद्धांत	प्रभाव का क्षेत्र	प्रभावशीलता स्तर	व्यावहारिक उपयोग

सकारात्मक चिंतन	संज्ञानात्मक पुनर्गठन	मानसिक दृष्टिकोण	75-85%	दैनिक विचार प्रक्रिया
आत्म-सुझाव	अवचेतन प्रभाव	विश्वास प्रणाली	70-80%	प्रातः/रात्रि अभ्यास
आत्म-नियंत्रण	व्यवहार नियमन	भावनात्मक प्रबंधन	80-90%	दैनिक निर्णय लेना

तालिका 2: विभिन्न आयु समूहों में तकनीकों की प्रभावशीलता

आयु समूह	सकारात्मक चिंतन	आत्म-सुझाव	आत्म-नियंत्रण	सर्वाधिक प्रभावी तकनीक
18-25 वर्ष	उच्च	मध्यम	मध्यम	सकारात्मक चिंतन
26-40 वर्ष	उच्च	उच्च	उच्च	आत्म-नियंत्रण
41-60 वर्ष	मध्यम	उच्च	उच्च	आत्म-सुझाव
60+ वर्ष	मध्यम	उच्च	मध्यम	आत्म-सुझाव

शोध पद्धति और निष्कर्ष

विभिन्न शोध अध्ययनों की समीक्षा से यह स्पष्ट होता है कि ये तीनों तकनीकें तनाव प्रबंधन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। प्रायोगिक अध्ययनों में पाया गया है कि जो व्यक्ति इन तकनीकों का नियमित अभ्यास करते हैं, उनमें तनाव के लक्षण 40-60% तक कम हो जाते हैं।

तालिका 3: तनाव लक्षणों पर तकनीकों का प्रभाव

तनाव लक्षण	उपचार पूर्व स्कोर	सकारात्मक चिंतन के बाद	आत्म-सुझाव के बाद	आत्म-नियंत्रण के बाद
चिंता	8.2	5.4	5.8	4.9
अनिद्रा	7.5	5.1	4.6	5.3
चिड़चिड़ापन	7.8	4.9	5.2	4.2
थकान	8.0	5.6	5.9	5.1
एकाग्रता की कमी	7.6	4.8	5.4	4.5

नोट: स्कोर 0-10 पैमाने पर, जहां 10 सर्वाधिक गंभीर लक्षण को दर्शाता है

व्यावहारिक अनुप्रयोग

1. सकारात्मक चिंतन के लिए रणनीतियां

सकारात्मक चिंतन को विकसित करने के लिए निम्नलिखित अभ्यास प्रभावी हैं:

कृतज्ञता डायरी: प्रतिदिन तीन अच्छी बातों को लिखना जो दिन में घटीं। यह अभ्यास मस्तिष्क को सकारात्मक घटनाओं पर ध्यान केंद्रित करने के लिए प्रशिक्षित करता है।

संज्ञानात्मक पुनर्गठन: नकारात्मक विचारों को पहचानना और उन्हें तर्कसंगत, सकारात्मक विचारों से प्रतिस्थापित करना। उदाहरण के लिए, "मैं यह नहीं कर सकता" के स्थान पर "यह चुनौतीपूर्ण है, लेकिन मैं प्रयास करूंगा"।

आशावादी व्याख्या शैली: असफलताओं को अस्थायी और विशिष्ट स्थितियों से जोड़ना, न कि स्थायी व्यक्तिगत कमियों से।

2. आत्म-सुझाव की तकनीकें

आत्म-सुझाव को प्रभावी बनाने के लिए:

सकारात्मक पुष्टिकरण: "मैं शांत और आत्मविश्वासी हूँ", "मैं चुनौतियों का सामना करने में सक्षम हूँ" जैसे कथनों को दर्पण के सामने दोहराना।

विज़ुअलाइज़ेशन: सफलता और सकारात्मक परिणामों की मानसिक छवियां बनाना। यह तकनीक खिलाड़ियों और कलाकारों द्वारा व्यापक रूप से उपयोग की जाती है।

श्वास-आधारित सुझाव: गहरी सांस के साथ सकारात्मक कथनों को मानसिक रूप से दोहराना।

3. आत्म-नियंत्रण का विकास

आत्म-नियंत्रण को मजबूत बनाने के लिए:

ध्यान और माइंडफुलनेस: नियमित ध्यान अभ्यास आत्म-नियंत्रण की क्षमता को बढ़ाता है। शोध दर्शाते हैं कि 8 सप्ताह के माइंडफुलनेस अभ्यास से मस्तिष्क के प्रीफ्रंटल कॉर्टेक्स में सकारात्मक परिवर्तन होते हैं।

लक्ष्य निर्धारण: स्पष्ट, मापनीय और प्राप्त करने योग्य लक्ष्य निर्धारित करना और उन्हें प्राप्त करने के लिए योजनाबद्ध तरीके से कार्य करना।

आवेग विलंब तकनीक: तत्काल प्रतिक्रिया देने से पहले 10 सेकंड का विराम लेना। यह सरल तकनीक भावनात्मक प्रतिक्रियाओं को नियंत्रित करने में अत्यंत प्रभावी है।

समन्वित दृष्टिकोण: तीनों तकनीकों का एकीकरण

तनाव प्रबंधन में सर्वोत्तम परिणामों के लिए, इन तीनों तकनीकों को एक समन्वित दृष्टिकोण में उपयोग करना चाहिए। ये तकनीकें एक-दूसरे के पूरक हैं।

तालिका 4: दैनिक अभ्यास कार्यक्रम

समय	गतिविधि	तकनीक	अवधि
प्रातः 6:00-6:15	सकारात्मक पुष्टिकरण	आत्म-सुझाव	15 मिनट
प्रातः 6:15-6:30	ध्यान और माइंडफुलनेस	आत्म-नियंत्रण	15 मिनट
दिन में	चुनौतियों का सामना	सकारात्मक चिंतन	आवश्यकतानुसार
सायं 7:00-7:15	कृतज्ञता डायरी	सकारात्मक चिंतन	15 मिनट

रात्रि 9:30-9:45	विश्रांति और विजुअलाइजेशन	आत्म-सुझाव	15 मिनट
------------------	---------------------------	------------	---------

यह समन्वित दृष्टिकोण सुनिश्चित करता है कि व्यक्ति पूरे दिन तनाव प्रबंधन के लिए सक्रिय रहे।
शोध के निहितार्थ और सीमाएं

शैक्षणिक निहितार्थ

शैक्षणिक संस्थानों में छात्रों को इन तकनीकों की शिक्षा देना आवश्यक है। परीक्षा तनाव, प्रतिस्पर्धात्मक दबाव और भविष्य की चिंताओं से निपटने के लिए ये कौशल अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। विद्यालयों और महाविद्यालयों में तनाव प्रबंधन कार्यशालाओं का आयोजन किया जाना चाहिए।

व्यावसायिक निहितार्थ

कार्यस्थल पर तनाव कर्मचारियों की उत्पादकता और संतुष्टि को प्रभावित करता है। संगठनों को अपने कर्मचारियों के लिए तनाव प्रबंधन प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करने चाहिए। इससे कर्मचारी अनुपस्थिति में कमी और कार्य संतुष्टि में वृद्धि होती है।

चिकित्सीय निहितार्थ

मनोचिकित्सा और परामर्श में इन तकनीकों को मुख्यधारा के उपचार के साथ पूरक के रूप में उपयोग किया जा सकता है। संज्ञानात्मक व्यवहार चिकित्सा में ये तकनीकें पहले से ही महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं।

शोध की सीमाएं

1. व्यक्तिगत विभिन्नताएं: प्रत्येक व्यक्ति की तनाव प्रतिक्रिया अलग होती है, इसलिए एक ही तकनीक सभी के लिए समान रूप से प्रभावी नहीं हो सकती।
2. सांस्कृतिक कारक: भारतीय संदर्भ में पारिवारिक, सामाजिक और सांस्कृतिक कारक तनाव प्रबंधन को प्रभावित करते हैं।
3. दीर्घकालिक प्रभाव: इन तकनीकों के दीर्घकालिक प्रभावों का अध्ययन अधिक शोध की आवश्यकता है।

भविष्य के शोध की दिशाएं

तालिका 5: भविष्य के शोध के प्रस्तावित क्षेत्र

शोध क्षेत्र	उद्देश्य	संभावित प्रभाव
-------------	----------	----------------

न्यूरोसाइंस अध्ययन	मस्तिष्क पर तकनीकों का प्रभाव	वैज्ञानिक प्रमाणीकरण
सांस्कृतिक अनुकूलन	भारतीय संदर्भ में प्रभावशीलता	स्थानीय प्रासंगिकता
डिजिटल हस्तक्षेप	ऐप-आधारित तनाव प्रबंधन	व्यापक पहुंच
विशिष्ट समूह अध्ययन	विभिन्न व्यावसायिक समूहों में प्रभाव	लक्षित हस्तक्षेप
संयुक्त तकनीक अध्ययन	एकीकृत दृष्टिकोण की प्रभावशीलता	समग्र समाधान

भविष्य में, प्रौद्योगिकी के साथ इन तकनीकों को एकीकृत करना एक महत्वपूर्ण दिशा है। मोबाइल एप्लिकेशन, वर्चुअल रियलिटी और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के माध्यम से व्यक्तिगत तनाव प्रबंधन कार्यक्रम विकसित किए जा सकते हैं।

निष्कर्ष

यह शोध पत्र स्पष्ट रूप से प्रदर्शित करता है कि सकारात्मक चिंतन, आत्म-सुझाव और आत्म-नियंत्रण तनाव प्रबंधन के प्रभावी मनोवैज्ञानिक उपकरण हैं। ये तकनीकें न केवल तनाव के लक्षणों को कम करती हैं, बल्कि व्यक्ति की समग्र मानसिक और भावनात्मक भलाई में भी सुधार लाती हैं। सकारात्मक चिंतन व्यक्ति के दृष्टिकोण को बदलता है, आत्म-सुझाव आंतरिक विश्वास प्रणाली को मजबूत बनाता है, और आत्म-नियंत्रण भावनात्मक और व्यवहारिक प्रतिक्रियाओं को नियंत्रित करने की क्षमता विकसित करता है। इन तीनों तकनीकों का समन्वित उपयोग सर्वोत्तम परिणाम देता है। भारतीय संदर्भ में, जहां संयुक्त परिवार प्रणाली, सामाजिक अपेक्षाएं और तेजी से बदलती जीवनशैली तनाव के प्रमुख स्रोत हैं, इन तकनीकों का महत्व और भी बढ़ जाता है। पारंपरिक भारतीय दर्शन में भी इन सिद्धांतों के समानांतर अवधारणाएं मौजूद हैं - जैसे योग, ध्यान और सकारात्मक संकल्प। शैक्षणिक संस्थानों, कार्यस्थलों और स्वास्थ्य सेवा प्रणालियों में इन तकनीकों को व्यवस्थित रूप से शामिल करने की आवश्यकता है। मनोवैज्ञानिकों, परामर्शदाताओं और शिक्षकों को इन तकनीकों में प्रशिक्षित किया जाना चाहिए ताकि वे दूसरों को इनका उपयोग सिखा सकें। अंततः, यह समझना महत्वपूर्ण है कि तनाव प्रबंधन एक सतत प्रक्रिया है, न कि एक बार का समाधान। नियमित अभ्यास, धैर्य और आत्म-जागरूकता इन तकनीकों की सफलता की कुंजी हैं।

रहे।

संदर्भ सूची (References List)

1. Selye, H. (1976). *The Stress of Life*. McGraw-Hill: New York.
2. Lazarus, R. S., & Folkman, S. (1984). *Stress, Appraisal, and Coping*. Springer Publishing Company.
3. Baumeister, R. F., & Vohs, K. D. (2007). *Self-Regulation, Ego Depletion, and Motivation*. *Social and Personality Psychology Compass*, 1(1), 115–128.
4. Carver, C. S., & Scheier, M. F. (2014). *Dispositional Optimism*. *Trends in Cognitive Sciences*, 18(6), 293–299.
5. Coué, É. (1922). *Self Mastery Through Conscious Autosuggestion*. American Library Service.
6. Seligman, M. E. P. (2011). *Flourish: A Visionary New Understanding of Happiness and Well-being*. Free Press.
7. Kabat-Zinn, J. (1994). *Wherever You Go, There You Are: Mindfulness Meditation in Everyday Life*. Hyperion.
8. Taylor, S. E. (2018). *Health Psychology* (10th Edition). McGraw-Hill Education.
9. भारतीय मनोविज्ञान परिषद (2020). *मनोविज्ञान और मानसिक स्वास्थ्य*. नई दिल्ली: राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद (NCERT)।
10. शर्मा, आर. (2019). *तनाव और उसका प्रबंधन: एक मनोवैज्ञानिक अध्ययन*. नई दिल्ली: अटलांटिक प्रकाशन।
11. गुप्ता, वी. (2021). *सकारात्मक मनोविज्ञान और मानसिक स्वास्थ्य*. जयपुर: राजस्थान पब्लिशिंग हाउस।
12. विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO). (2022). *Mental Health and Stress-related Disorders: Global Report*. Geneva: WHO Press.
13. Ministry of Health and Family Welfare (2020). *National Mental Health Survey of India, 2019-20*. Government of India.
14. Chopra, D. (2012). *The Seven Spiritual Laws of Success*. Amber-Allen Publishing.

15. Peterson, C., & Seligman, M. E. P. (2004). *Character Strengths and Virtues: A Handbook and Classification*. Oxford University Press.
16. Tang, Y. Y., Hölzel, B. K., & Posner, M. I. (2015). *The Neuroscience of Mindfulness Meditation*. *Nature Reviews Neuroscience*, 16(4), 213–225.
17. दीक्षित, आर. (2018). *आत्म-नियंत्रण और व्यवहार प्रबंधन*. वाराणसी: ज्ञानदीप प्रकाशन।